Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2016 = 6.17, www.srjis.com
UGC Approved Sr. No.49366, NOV-DEC 2017, VOL- 4/37

''अध्यात्म रामायण में समाज चित्रण''

(महाभारत काल में नारी की प्रस्थिति : एक सिंहावलोकन)

रंजना यादव

1556, शम्भूनगर, शिकोहाबाद

Abstract

महाभारत में आये हुए समस्त नारी पात्र उच्च कुल से सम्बद्ध हैं, वे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से राजवंश से सम्बद्ध हैं, अतः जनसाधारण समाज में नारी की वास्तविक स्थिति का परिचय हमें इस काव्य में नहीं मिलता है, फिर भी इतना सत्य है कि नारी तत्कालीन समाज में गृहस्थ की गृहलक्ष्मी थी, उसके सम्पूर्ण अधिकार उसे प्राप्त थे। नारी और पुरूष का कर्मक्षेत्र भिन्न था फिर भी वे एक–दूसरे के पूरक थे, एक दूसरे की सहायता दोनों को अपेक्षित थी। दोनों पति–पत्नी को जन्मान्तर का साथी माना जाता था। रामायण काल के समाज की तरह महाभारत कालीन पिता कन्या के जनम को कष्टकारी नहीं मानते थे। पुत्र एवं कन्या में बहुत अधिक अन्तर नहीं माना जाता था। 'यथैवात्मा तथा पुत्रः पुत्रेण दुहिता समा'' पुत्र की भाँति कन्या के भी नाना विधि संस्कार किये जाते थे। राजा शान्तनु ने वन में प्राप्त कृप तथा कृपी नामक बालकों के समस्त संस्कार पूर्ण किये थे।

पारिभाशिक ३ब्दावली: *गृहस्थ, धर्मदर्शिनि, पाण्डित्य, गौतम धर्म सूत्र ।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

शोध प्रविधि :

प्रस्तुत शोध कार्य सर्वेक्षण विधि के माध्यम से सम्पादित किया गया। शोध उद्देश्यों की वांछित प्रतिपूर्ति हेतु मूल्यांकन, परीक्षण व अवलोकन आदि प्रविधियों का प्रयोग किया गया। विधि व प्रविधि अनुसंधान प्रकिया को परिचालित करने का एक तरीका है जो समस्या की प्रकृति के अनुसार निर्धारित होता है।

ऐतिहासिक विधि : इसका संबंध भृत काल से है तथा भविष्य को समझने के लिए भूत का वि" लेषण करती है।

महाभारत काल में नारी की प्रस्थिति:

''क्रियाश्च तस्या मुदिश्चक्रे स नृपसत्तमः।''

लड़कियों को अपने माता–पिता के गृह में नाना प्रकार की शिक्षा दी जाती थी। यद्यपिइ न लड़कियों को शिक्षा संस्था में जाता हुआ नहीं देखा जाता था, फिर भी उनकी विद्वता, ज्ञान, तर्कशक्ति, व्यवहारिक ज्ञान, राजनीतिक तथा अन्य शास्त्रों में उनका परिचय जगह–जगह प्रतिबिम्बित होता है। उस काल में नारियों में शकुन्तला, सावित्री, शिवा, विदुला, गौतमी, आचार्या, अरून्धती, दमयन्ती आदि जितनी भी

नारियाँ हैं और उनसे सम्बन्धित उपाध्यान हैं, उनसे यही प्रतिध्वनित होता है कि ये सभी विदुषी थीं, इन्होंने शास्त्र ज्ञान के साथ धर्म और राजनीति में विशेष दक्षता प्राप्त की थी। उनका चरित्र महान था। द्रोपदी ने विधिवत् बृहस्पति से राजनीति की शिक्षा ली थी, उसे जो विश्लेषण पंडिता, पतिव्रता, धर्मज्ञा, धर्मदर्शिनी आदि दिये गये हैं, वे उनके पाण्डित्य के द्योतक हैं। द्रोपदी तो समस्त राजव्यवस्था का सूत्र अपने हाथ में रखती थी। दास, दासियों पर नजर रखती थी। राजकोष के आय–व्यय का वह हिसाब रखती थी। उत्तरा ने भी गीत, नृत्य और वाद्य की शिक्षा ग्रहण की थी।[1]

महाभारतकार ने भी नारी के विषय में कुछ ऐसे तथ्यों का उद्घाटन किया है जो वास्तविकता से परे नहीं कहे जा सकते। यद्यपि महाभारतकाल विवादास्पद काल रहा है, लेकिन फिर भी मनुस्मृति के समान महाभारत में भी स्त्री को स्वतन्त्रता योग्य नहीं माना गया है। महाभारत में नारी की प्रशंसा में नारी को मनुष्य की श्रेष्ठतम संखा, त्रिवर्ग की मूल तथा मित्र कहा है।[2] इसके साथ ही साथ महाभारतकार ने स्त्रियों के आदर को सर्वोपरि मानते हुये कहा है कि स्त्रियों के आदर–सम्मान से युक्त समाज में देवता निवास करते हैं। जहाँ इनका आदर नहीं होता है, वहाँ सभी क्रियाएँ व्यर्थ हो जाती हैं।[3]

महाभारतकार ने स्त्रियों की प्रशंसा के साथ–साथ खुलकर निन्दा भी की है। महाभारतकार ने कहा है कि नारियों को पुरूषों के संसर्ग से अधिक कोई वस्तु अच्छी नहीं लगती।[4] स्त्रियों को महाभारतकार ने स्वभाव से ही चंचल बताया गया है।[5]

भारतीय संस्कृति में नारियों की सामाजिक प्रतिष्ठा सदैव प्रशंसनीय रही है। संकटकाल में नारी सदैव पुरूष की सहायक रही है।[6] इस विषय में महाभारतकार ने नारियों के सम्मान को वन पर्व में सुस्पष्ट रूप में प्रस्तुत किया है।[7] नारियों का सम्मान कथासरित्सागर में बतलाते हुए उन्हें पृथ्वी का आभूषण कहा गया है।[8] कल्हण ने राजतरंगिणी में सूर्यमति और सुगन्धा आदि के शासन कौशल का वर्णन किया है। सूर्यमति के विषय में राजतरंगिणी में विस्तृत रूप में कहा गया है। भारतीय संस्कृति के नारी विषक सम्मान को पाश्चात्य विद्वानों ने भी अत्यधिक महत्व प्रदान किया है।

''भर्तृनारी विधंयत्वं तस्यस भर्तृजयस्तथा।
निष्कलङ्ेन शीलन नान्योन्यं ग्रह्तभिजात्।।''[9]

विल्सन महोदय ने भारतीय संस्कृति में नारी के सम्मान के विषय में सुस्पष्ट रूप से हा है कि यह पूर्ण विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि किसी भी राष्ट्र में नारी इतनी महत्वपूर्ण प्रतिष्ठा को प्राप्त नहीं हुई जितनी भारतदेश में।

भारतीय मनीषियों ने नारी के रूप को पिता से अधिक पूजनीय माना है।[10] माता देहदात्री होने के साथ–साथ ज्ञानदात्री भी है। वह ममता, करूण एवं दया की मूर्ति होकर अक्षय स्नेह प्रदर्शित करती हुई सर्वोपरि गुरू मानी जाती है।[11]

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

इसी कारण अथर्ववेद में माता के अनुकूल मन वाला होने की प्रार्थना की गई है।[12] तैत्तिरीयोपनिषद् में माता को देवता के समान माना गया है।[13] गौतम धर्म सूत्र में माता को सर्वोत्तम गुरू माना गया है।[14] अत्रि स्मृति में कहा गया है कि माता से बढ़कर कोई गुरू नहीं है।[15]

अर्ध भार्या मनुष्यस्य भार्या श्रेष्ठतमः सखा।
भार्यामूलं त्रिवर्गस्य भार्यामल तरिष्यतः।।[15]

भारतीय शास्त्रों में कहा गया है कि भार्या मन, वाणी और कर्म से पति के आदेश का पालन करने वाली, सदा शरीर की छाया की भाँति पति को सहयोग देने वाली तथा पति हितकारिणी हुआ करती है।[17] महर्षि वाल्मीकि ने भार्या को न केवल अर्धांगिनी अपितु पति की अनन्य आत्मा बतलाया है।[18]

आत्माध्यनन्यः पुरूषस्य दाराः।

निश्कर्श : समग्र रूप में हम देखते हैं कि भारतीय संस्कृति में वैदिक काल से ही नारी को समाज में केवल पुरूष के समान विशिष्ट महत्वपूर्ण स्थान प्रदान है। भारतीय मनीषियों के अनुसार नारी ही समाज की आधारशिला है जिसका आश्रय पाकर समाज समुन्नत एवं समृद्धिपूर्ण हो पाता ह।

सन्दर्भ (References) :

महाभारत अनुशासन पर्व, 81/14 स्मृति, 912
आदि पर्व, 68/40
अनुशासन पर्व, 46/5
वही, 20/59
आरण्य पर्व, 96/9
कथासरित्सागर, 14/1/96
हिस्ट्री ऑफ इण्डिया विल्सन जिल्द 2, पृ.ठ–51
हिन्दू परिवार मीमांसा, पृष्ठ–163
ऋग्वेद, 1/24/46
अथर्ववेद, 3/30/2
तैत्तिरीयोपनिषद्, 1/11
गौतम धर्म सूत्र, 2/53
अत्रि स्मृति, 1/51
महाभारत आदि पर्व, 60/40–44
वही, 64/45
शुक्रनीति, 4/13
वाल्मीकि रामायण

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies